ACHARYA SHREE SURENDRASURISHWARJI JAIN TATVA GYANSHALA

12, SHREYANSNATH SOCIETY, B/H DHARNIDHAR TEMPLE,
GODAVARI ROAD, VASANA, AHMEDABAD-7

Book Issue Slip

Member No. : 1025 **Mobile Number :** 9428502456 **Receipt No. :** A0727
Member Name : पू.आचार्य भ. विजय जगचंद्रसूरीश्वरजी म.सा. **Total Issued :** 888
Address : 11, भुवनेश्वरपार्क सोसायटी, नारणपुरा क्रोसींग, नारणपुरा
Issue Date : 31/03/2023 **Last Date :** 29/06/2023

Sr No.	Vargank No.	Kruti Name
1	AL00277	कल्याण ज्योत
2	AL00278	कल्याण धारा
3	AL00279	कल्याण ध्वनि
4	AL00280	कल्याण स्त्रोत
5	AL00292	कल्याण भावना
6	AL00601	कल्याणनुं गान
7	AL00602	कल्याणनो कुंभ
8	AL00603	कल्याण यात्रा
9	AL00604	कल्याण मंत्र
10	AL05856	कल्याण कळश
11	AL05867	कल्याण काव्य
12	AL00293	कल्याण संदेश
13	AL06007	महावीरनो साधनापथ
14	AC03531	कल्याण ज्योत (कल्याणनी ज्योत झळकावतां संस्कृत सुभाषितो)
15	AC04436	कल्याण कामना (संस्कृत सुभाषितोमां घऊंटाती कल्याणनी कामना)
16	AD04503	कल्याण यात्रा
17	AC04099	वैयाकरण सिद्धान्त दर्शनम् (षट्पटलात्मकम्)
18	AC04201	संस्कृत व्याकरणदर्शन के विविध सोपान
19	AC12458	भर्तुहरी का व्याकरण दर्शन
20	AB03061	संस्कृत व्याकरण दर्शन
21	AB03081	व्याकरण दर्शन पीठिका

AL00277

AL00278

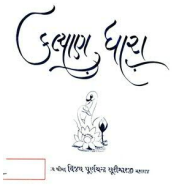

AL00279

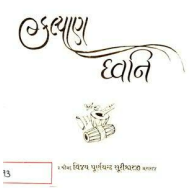

AL00280

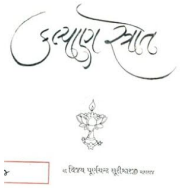

AL00292

AL00601

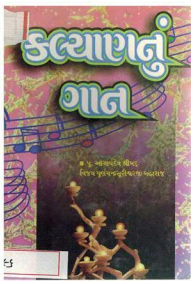

AL00602

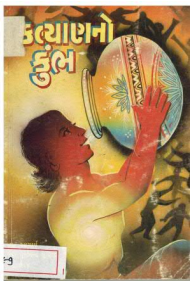

AL00603

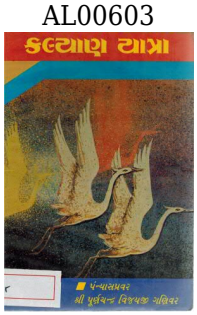

AL00604

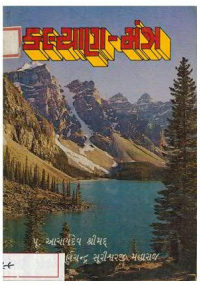

AL05856

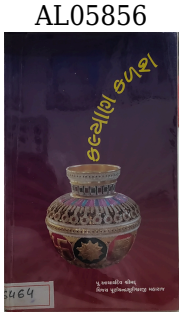

AL05867

AL00293

AL06007

AC03531

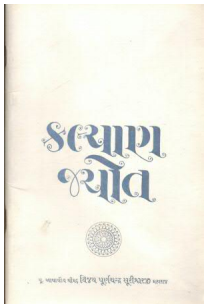

AC04436

AD04503

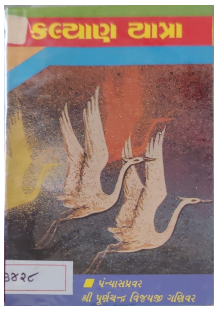

AC04099

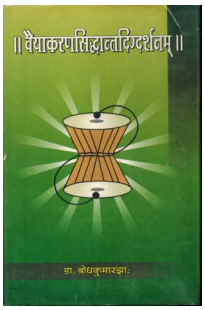

AC04201

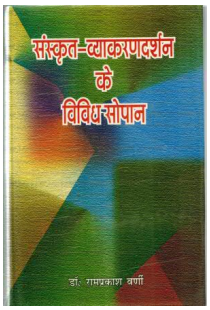

AC12458

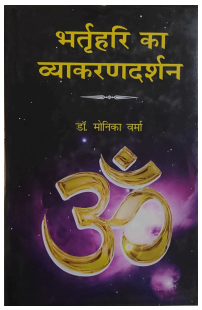

AB03061

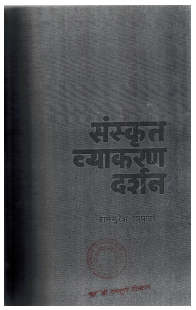

AB03081

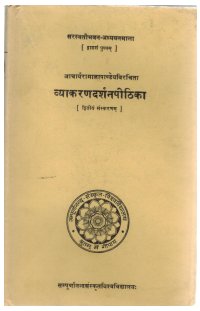

Notes : AL00277, AL00278, AL00279, AL00280, AL00292, AL00279, AL00601, AL00277, AL00602, AL00603, AL00604, AL05856, AL05867, AL00277, AL00279, AL00293, AL00280, AL06007, AC03531, AC04436, AD04503, AL00278, AC04099, AC04201, AC12458, AB03061, AB03081 - नयज्ञविजय म.सा (पाटण)

AB - B Size Books,वासणा ज्ञानभंडार, अमदावाद,AC - C Size Books,वासणा ज्ञानभंडार, अमदावाद,AD - D Size Books,वासणा ज्ञानभंडार, अमदावाद,AL - लोकप्रिय साहित्य विभाग, वासणा ज्ञानभंडार, अमदावाद

Book Received By

Book Issue By

संस्थाना नियमो :

1) संस्थाना पुस्तको फक्त मेम्बरने ज आपवामां आवशे.

2) पुस्तक 90 दिवसमां परत करवानुं रहेशे, कदाच वधारे समय राखवानुं थाय तो 90 दिवस बाद रिन्यु करावबु अनिवार्य छे.

3) पुस्तक फाटी के खोवाय जाय तो वाचके संस्था नक्की करे तेटलो दंड भरवानो रहेशे. दंडनी रकम पुस्तकनी छापेली किंमत करता वधु होई शके छे.